समाज विकासमाला

मूरखराज

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : ७०

मूरखराज

टॉल्स्टॉय की शिक्षाप्रद कहानी

अनुवादक
जैनेन्द्रकुमार

सम्पादक
यशपाल जैन

१९५७
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९५७
मूल्य
छः आना

मुद्रक
नैशनल प्रिंटिंग वर्क्स
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों। यह पुस्तकमाला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इन सबकी भाषा बड़ी आसान रक्खी गई है और जहां तक हो सका है, कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं होने दिया है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। विषय ऐसे लिये गये हैं जिनमें पाठकों की खास रुचि हो। छपाई-सफाई के बारे में विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

हम चाहते हैं कि इन किताबों को पढ़कर इनके बारे में पाठक हमें अपनी राय लिखें। यदि पुस्तकों की भाषा-शैली, विषय और छपाई में उन्हें सुधार की गुंजाइश मालूम होती हो तो उसकी भी सूचना निःसंकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

पाठकों से

पाठक टाल्स्टाय का नाम अच्छी तरह से जानते हैं। उन्हें यह भी मालूम है कि इस लेखक ने कितनी सुन्दर रचनाएं की हैं। इनकी एक कहानी 'कितनी जमीन' पाठक इस माला में पहले ही पढ़ चुके हैं।

इस पुस्तक में हम टाल्स्टाय की एक दूसरी कहानी दे रहे हैं। यह कहानी गांधीजी को इतनी पसन्द आई थी कि उन्होंने स्वयं इसका गुजराती में अनुवाद किया था। असल में यह कहानी है ही ऐसी कि दिल पर गहरा असर करती है।

इस कहानी में हाथ की मेहनत की महिमा दिखाई गई है। यह भी बताया गया है कि अगर आदमी मजबूत हो तो बड़ी-से-बड़ी बुराई भी उससे हार मान लेती है। कहानी जितनी रोचक है, उतनी ही सीख देने वाली भी है।

हमें आशा है कि हरेक पाठक इस कहानी को पढ़ेगा और दूसरे पाठकों को भी पढ़वायेगा।

—सम्पादक

मूरखराज

: १ :

एक किसान था। खासी खाती-पीती हालत थी और तीन उसके बेटे थे——बलजीतसिंह, धनवीरसिंह और प्यारासिंह। बलजीत फौजी निकला, धनवीर कुशल कारबारी बना, पर प्यारासिंह मूरख था। लोग उसे मूरखराज कहते थे। एक लड़की भी थी, पीतमकौर। वह गूंगी और बहरी थी। सो वह बिनब्याही ही रही। बलजीत तो राजा की तरफ से फौज में लड़ाई करने गया, धनवीर शहर जाकर एक सौदागर के साथ व्यापार में लग गया और मूरखराज लड़की के साथ घर ही रहा।

बलजीत ओहदे-पर-ओहदा पाता गया। पर खर्च के वक्त हाथ तंग पाता था। असल में पति जो लाता, श्रीमती सब उड़ा देती थीं।

एक बार वह अपने इलाके की जमीन में तहसील करने गया, पर कुछ भी नहीं मिला।

इसपर बलजीत अपने पिता के पास गया। बोला—"पिताजी, तुम्हारे पास जमीन है, जायदाद है और माल है। सब तीन हिस्सों में बांट दो और मेरा हिस्सा मुझे

दे दो ।"

पिता ने कहा--"तुमने घर में कुछ लाकर रखा है, जो तीसरा हिस्सा तुम्हें दे दूं ? और मूरखराज और पीतमकौर के हित में यह अन्याय होगा ।"

बलजीत बोला, "मूरख तो मूरख है, और पीतम-कौर गूंगी-बहरी है । उमर भी काफी हो गई है । इलाके-जायदाद का वे भला करेंगे भी क्या ?"

बूढ़े ने कहा--"खैर, मूरख से इस बाबत पूछ तो लें ।"

मूरख आया । पिता के पूछने पर बोला--"पिता-जी, जो ये चाहें, इनको दे दीजिए ।"

बलजीत बाप के माल में से अपना तिहाई हिस्सा ले वहां से चल दिया ।

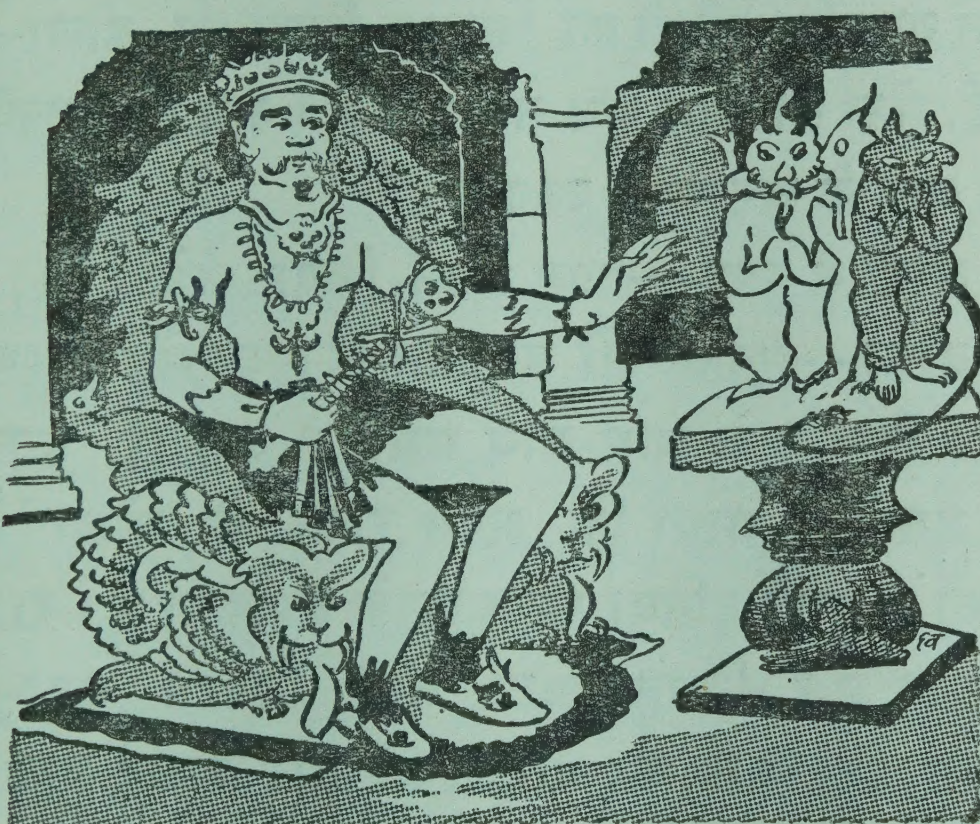
उधर धनवीर ने भी खासा धन पैदा किया और एक बड़े व्यापारी की लड़की से शादी की । पर तबीयत और पाने को होती थी । सो वह भी बूढ़े बाप के पास आया और मांगने पर उसको भी अपना हिस्सा मिल गया ।

: २ :

पाताल में रहता था एक शैतान । उसको बड़ी झुंझलाहट हुई कि देखो, तीनों भाइयों में बंटवारे का झगड़ा भी कोई नहीं हुआ । सब काम अमन-सुलह से

हो गया। उसने अपने तीन चरों को बुलाया।

बोला--"देखो जी, ये हैं तीन भाई। बलजीत फौजी, धनवीर व्यापारी और प्यारा मूरख। उन तीनों में कलह होनी चाहिए। उनमें कलह नहीं हुई और तीनों हेल-मेल से रहते हैं। असल में खराबी सब उस मूरख की है। उसी ने मेरा काम बिगाड़ रखा है। तुम तीनों जाओ और एक-एक करके उन तीनों भाइयों को कब्जे में लो। ऐसी तजवीज करो कि



"तीनों भाइयों को अपने हाथ में करलो।"

तीनों आपस में नोंच-खसोट करने लगे और जान के ग्राहक हो जायं। बोलो, कर सकोगे?"

तीनों बोले, "जी, कर लेंगे?"

तीनों चर वहां से चले और एक गढ़े में आकर परची डाल कर तय कर लिया कि किसके जिम्मे कौन भाई रहेगा और यह भी कि अगर एक का काम पहले निबट जायगा तो वह आकर दूसरे की मदद में लगेगा। उन्होंने एक दिन भी नियत किया जब सब जने फिर इसी गढ़े में आकर जमा हों।

निश्चय के मुताबिक तीनों चर एक दिन गढ़े में जमा हुए। हरेक अपनी बीती सुनाने लगा। पहला, जिसने बलजीत फौजी का जिम्मा लिया था, बोला—"भाई, मेरा तो काम खूब चल रहा है। कल ही बलजीत अपने बाप के घर पहुंच जायगा।"

औरों ने पूछा—"यह तुमने किया कैसे ?"

बोला—"पहले तो बलजीत के अंदर मैंने हिम्मत भरी। हिम्मत के साथ-साथ घमंड। आखिर इतना बूता उसमें हो आया कि अपने राजा से बोला कि आपको मैं सारी दुनिया फतह करके दे सकता हूं। राजा ने इसपर उसे सिपहसालार बना दिया। कहा—"अच्छा, हिंदुस्तान का मोरचा लो और जाकर वहां के राजा को शिकस्त दो।" दोनों की फौजें मोरचे पर मिलीं। पर इधर मैंने क्या किया कि बलजीत की छावनी की तमाम बारूद नम कर दी और हिंदुस्तानी फौज के लिए रात-ही-रात में फूंस के इतने सिपाही बना दिये कि गिनती के बाहर।

"सवेरे बलजीत की फौज ने उन फूसी सिपाहियों को अपना घेरा डाले देखा तो वह घबरा गई। बलजीत ने गोली चलाने का हुक्म दिया। लेकिन तोप और बंदूक चल कहां से सकती थी ? बलजीत के सिपाही मारे डर के भेड़ों की तरह भाग निकले। बलजीत की बड़ी ख्वारी हुई। उसका सब इलाका छिन गया और कल फांसी चढ़ा देने की बात है। बस अब मेरे लिए एक दिन का काम बाक़ी रह गया है। जाकर उसे जेल से छुड़ा देना है कि भागकर वह अपने घर जा पहुँचे।"

उसके बाद दूसरा चर, जिसने धनवीर को हाथ में लिया था, अपनी बीती सुनाने लगा। बोला—"मुझे तो भाई, किसी की मदद की जरूरत है नहीं। धनवीर को काबू में लाने में एक हफ्ता भी नहीं लगेगा। पहले तो खूब आराम दे मैंने उसे फुला कर मोटा कर दिया। फिर तो उसका लोभ इतना बढ़ गया कि जो दीखे उसीको रुपये से खरीद लेने की तबियत होने लगी। अब दुनिया भर का माल खरीद कर उसने भर लिया है। खरीद अब भी जारी है। कर्ज का रुपया भी वह लगाने लगा है। हफ्ते भर में रुपया चुकती का दिन आने वाला है! उससे पहले ही जो माल उसने जमा किया है उस सबका मैं सत्यानाश कर देता हूं। कर्ज वह फिर चुका

नहीं सकेगा और लाचार बाप के घर भागा आयगा।"

इसके बाद मूरखवाला चर बोला—"भाई, मेरा मामला तो ठीक रास्ते पर नहीं आ रहा है। पहले तो मैंने उसके दूध के कटोरे में कुछ मिला दिया कि पेट में उसके पीर हो जाय। उसके बाद जाकर पीट-पीटकर खेत की धरती को ऐसा कर दिया कि लाख जोतो वह जुते ही नहीं। मैंने सोचा था कि वह अब इसे क्या जोतेगा। पर मूरख तो अजब ठहरा! देखता क्या हूं कि वह तो हल लिये चला आ रहा है। आकर जमीन को गोड़ना उसने शुरू कर दिया। पेट की पीर से कराह-कराह पड़ता था, पर बंदा हल नहीं छोड़ता था। मैंने हल तोड़ कर रख दिया। पर वह मूरख गया और घर जाकर दूसरा हल निकाल लाया और लगा फिर धरती गोड़ने। मैं धरती के अंदर घुस गया और हल की पैंड़ को पकड़ लिया। पर पकड़े रहता कैसे? हल पर अपना सारा बोझ देकर वह चलाने लगा। पैंड़ की धार पैनी थी, मेरा हाथ जख्मी हो गया। उसने सारा खेत जोत डाला है, बस जरा किनारी बची रह गई है। भाई, आकर मेरी मदद करो, क्योंकि उसपर काबू नहीं चला तो हमारी सारी मेहनत अकारथ जायगी।"

मदद की कहकर तीनों चर अपने-अपने काम पर चले गये।

: ३ :

प्यारे नन्हीं बची किनार को पूरा करने आ जुटा। एक लीक उसने पूरी कर दी। दूसरे पर लौट रहा था तो हल फिसटता-सा मालूम हुआ, जैसे अंदर किसी जड़ से अटक गया हो। असल में धरती में दुबक कर बैठा था वह चर। उसने हल की पैंड़ पर अपनी टांगें कसकर लिपटा ली थीं और उसे चलने से रोक रहा था।

प्यारे ने सोचा--कल तो यहां कोई जड़-वड़ थी नहीं। आज यह जड़ यहां आई तो कहां से आई !

उसने झुककर गहरे हाथ देकर धरती के अन्दर टटोला तो कुछ गीली-गीली और चिकनी चीज उसे छुई। प्यारे ने उस चीज को पकड़कर बाहर खींच लिया। जड़ की तरह की कोई काली चीज कुलबुला रही थी। असल में वह उस चर की ही काया थी।

देखकर प्यारे बोला--"छिः, क्या गंध है !" कहकर हाथ ऊपर उठाया कि उस चीज को हल से दे मारे।

पर यह देखकर वह चर चीख पड़ा। बोला--"मुझे मत मारो। जो बताओ, मैं वही तुम्हारे लिए करूँगा।"

प्यारे ने सिर खुजलाया, बोला--"मेरे पेट में दर्द है। उसे अच्छा कर सकते हो ?"

"जरूर कर सकता हूँ।"

कहकर वह चर वहीं धरती में घुस गया। वहां

पंजों से खरोंच-खरोंच, आसपास टटोल, आखिर एक जड़ी खींचकर बाहर लाया। उसकी जड़ में से तीन शाखें निकल रही थीं, लाकर प्यारे के हाथ में दे दीं।

बोला--"यह देखिए, इसमें से जो कोई एक खायेगा, उसके सब रोग दूर हो जायंगे ।" प्यारे ने एक शाखा खाली। पेट का दर्द अच्छा हो गया।

चर ने कहा--"अब मुझे छोड़ दीजिये। मैं अब धरती में होकर सीधा पाताल चला जाऊँगा और फिर नहीं लौटूंगा।"

प्यारे ने कहा, "अच्छी बात है, जाओ। भगवान तुम्हारा भला करे।"

भगवान का नाम प्यारे के मुंह से निकलना था कि जैसे जल में कंकड़ गिरकर गायब हो जाय, वैसे ही वह चर धरती में गिरकर लोप हो गया।

प्यारे ने बाकी बची जड़ी टोपी में खोंस ली और अपने काम में लग गया। खेत की बची किनार पूरी करके घर आया। वहां देखता क्या है कि बलजीत और उसकी बीवी जीमने थाली पर बैठे हैं। बलजीत का इलाका-जायदाद सब जब्त हो गया था और जैसे-तैसे वह भागकर बाप के घर दिन गुजारने आया था।

प्यारे को देखकर बलजीत ने कहा--"प्यारे, हम तुम लोगों के यहां रहने आये हैं। दूसरा बन्दोबस्त हो, तबतक मैं और मेरी बीवी तुम्हारे ऊपर हैं।

खयाल रखना।"

प्यारे बोला--"अच्छी बात है। खुशी के साथ यहां रहिये।"

: ४ :

अपना काम निबटाकर बचन के मुताबिक उस रात बलजीत का चर मूरखवाले अपने साथी की तलाश में आया। पर प्यारे के खेत पर आकर उसने बहुतेरी खोज-ढूंढ़ की। साथी तो मिला नहीं, मिला वह धरती का सूराख।

सोचा--"जरूर मेरे साथी पर कोई विपत पड़ी है। मुझे उसकी जगह भरनी चाहिए। खेत तो खैर, उसने पूरा खोद दिया है। चलकर चराई की जगह उस मूरख की खबर लेता हूं।"

उसने मूरख की जमीन को पानी-ही-पानी से भर दिया, जिससे घास सब कीच से लथपथ हो गई।

मूरख सवेरे के वक्त बाहर चला। हंसिया उसने पैना लिया कि जाकर घास काटनी है। कटाई उसने शुरू की। पर दो-एक हाथ मारना था कि क्या देखता है कि हंसिया मुड़-मुड़ जाता है और घास कटती नहीं है। कुछ देर तो प्यारे कोशिश करता रहा। फिर बोला--"ऐसे नहीं, घर चलकर कुछ लाऊं कि हंसिया सीधा हो जाय। चलो, शाम की रोटी भी लिये आता

हूं ।"

प्यारे लौटा । हंसिया सीधा किया और पैनाया और फिर घास काटने पर आ भिड़ा । चर इस बार धरती में घुसकर क्या करता कि हंसिये को बार-बार बेंटे से पकड़कर ऐसे घुमाता कि नोक उसकी धरती में आकर लगती । प्यारे को काम में कठिनाई पड़ी । पर वह लगा ही रहा और दल-दल की जरा-सी जगह को छोड़ आखिर सब घास उसने काट ही डाली । तब चर आकर उस दलदल की धरती में बैठ गया ।

मूरख अन्त में उस दलदली जमीन पर पहुंचा । घास वहां ऐसी घनी तो नहीं थी, फिर भी हंसिया के बस न आती दीखती थी । प्यारे को गुस्सा चढ़ आया और हंसिया को पूरे छोर से घुमाकर मारने लगा । वह चर तब हार गया। एक झाड़ी में वह घुस बैठा। होते-होते प्यारे उधर भी बढ़ आया । झाड़ी को हाथ से पकड़ हंसिया जो उसने चलाया तो चर की आधी पूंछ कटकर अलग हो गई । खैर, घास की कटाई खतम कर वह जई के खेत पर पहुंचा। हंसिया साथ ले गया । बेपूंछ का चर वहां पहले जा पहुंचा था। उसने जई की बालों को ऐसा उलझा दिया कि हंसिया उनकी कटाई के लिए बेकाम पड़ गया । मूरख घर गया और दांतेदार दरांत ले आया। उससे सारी जई उसने काट ली ।

फिर बोला—"अब चलो, कल मकई शुरू करेंगे।"

पूंछकटे चर ने यह सुना और मन में कहने लगा कि खैर, यहां काबू में नहीं आया तो क्या, चलकर मकई में देखेंगे। सवेरे तक की ही तो बात है।

सबेरे ही चर खेत पर पहुंच गया। वहां पर देखता क्या है कि मकई तो सब कटी बिछी है। प्यारे ने रात-ही-रात में सब काट डाली थी। यह देख चर को बड़ा गुस्सा आया। बोला—कम्बख्त ने लहू-लुहान कर दिया और थका मारा। खैर, मैं अब उसके पूलों में घुसा जाता हूं और सब अन्दर से सड़ा दूंगा।"

वह चर जई के पूलों में दाखिल हो गया और सड़ांद फैलाना शुरू किया। पहले तो वहां गरमी पहुंचाई, पर इससे उसे खुद ताप मिला और सरदी में गरमी पाकर वह चैन में सो गया।

प्यारे गाड़ी लेकर बहन के साथ जई ढोने आ पहुंचा। एक-एक कर पूलों को उसने गाड़ी में फैंकना शुरू किया। ऐसे दो-एक फंके होंगे कि जेली लेकर उनके ढेर को हिलाया। यह करना था कि जेली की नोक जाकर ऐन चर के बदन पर पड़ी और चर उस-की नोक पर छिद गया। प्यारे ने जेली को उठाया तो क्या देखता है कि उसकी नोक पर पूंछकटा कोई जन्तु-सा लिपटा हुआ कुलबुला रहा है और छूटने की कोशिश कर रहा है।



चर जेली की नोक से छिद गया।

"क्यों रे, गन्दगी के कीड़े, तू फिर यहां ?"

चर बोला—"जी नहीं, मैं दूसरा हूं। पहला मेरा साथी था।"

प्यारे बोला—"खैर जो भी हो, तुम्हारी भी वही गति होगी।"

कहकर वह गाड़ी के पहिये की हाल से उसे दे मारने ही वाला था कि चर बोला—"मुझे छोड़ दीजिये। जो मुझे कहेंगे कर दूंगा।"

"तुम क्या कर सकते हो ?"

"चाहे जितने सिपाही बनाकर दे सकता हूं।"

"सिपाही करेंगे क्या ?"

"जो चाहे वह काम उनसे लें। जो कहेंगे, वही।"

"गा-बजा भी सकेंगे ?"

"हाँ।"

"अच्छी बात है। बना दो मुझे कुछ सिपाही।"

चर बोला--"यह देखिए, ऐसे जई का एक पूला ले लीजिए। उसे धरती पर जमा दीजिए और यह मंतर पढ़िये--

ओ भई पूले, कहना मान, मेरी तुझको यही ज़ुबान।
जहां-जहां हो तेरी सींक, वहीं हो उठे एक जवान।"

प्यारे ने पूला लिया, धरती पर जमाया और चर का बताया मंतर पढ़ा। पूला देखते-देखते गायब हो गया और उसकी एक-एक बाल की जगह एक-एक सिपाही खड़ा दिखाई दिया। एक के पास ढोल था, दूसरे के पास तुरही--ऐसे पूरे बैण्ड का सामान था।

देखकर प्यारे खुश हुआ और खूब हँसा। बोला--"यह तो बढ़िया बात रही। लड़कियां कैसी खुश होंगी ?"

चर बोला--"अब मुझे जाने दीजिए।"

प्यारे ने कहा--"नहीं जी, सिपाही मैं खाली पुआल के बनाऊंगा। उनके लिए नाजवाली बाल खराब करने वाला थोड़े ही हूं। अच्छा, बताओ कि सिपाही फिर पहले पूले की हालत में कैसे आ सकते हैं?"

चर बोला--"तो यह मंतर पढ़िये--

सुनता है तू अरे जवान, मेरी है बस एक ज़ुबान।

सींक-सींक था जैसा पहले, वैसा ही तू हो जा मान ।।"

प्यारे का यह मंतर कहना था कि सिपाही अन्तर्धान हो गये और जैसा-का-तैसा वहां पूला हो आया ।

प्यारे ने जेली की नोक से उसे छुड़ाया और कहा, "अच्छी बात है, जाओ, भगवान तुम्हारा भला करे !"

भगवान का नाम निकलना था कि वह धरती पर छूटकर गायब हो गया और वहां निशानी में एक सूराख रह गया ।

प्यारे ने लौटकर देखा कि उसका मंझला भाई धनवीर आया हुआ है । साथ बीवी भी है और दोनों जने खाने बैठे हैं ।

धनवीर अपना देना चुकता नहीं कर सकता था । इसलिए साहूकारों से बचकर यहां भाग आया था और आकर बाप के घर में शरण ली थी । प्यारे को देखकर धनवीर ने कहा—"सुनो भाई मूरख, दूसरा काम लगे तबतक मैं और मेरी बीवी यहीं हैं ।"

प्यारे बोला, "ठीक है ।"

: ५ :

धनवीर का चर खाली हो गया था । ठहरे मुताबिक मूरख को बस में लाने में अपने साथियों की मदद करने वह भी उस रात आ पहुंचा । पर खेत में घूम-फिरकर बहुतेरा देखा, वहां कोई नहीं था । मिला तो सूराख

मिला। वह फिर चरी की धरती में आया। वहां दल-दली धरती में देखा तो उसके साथी की पूंछ कटी पड़ी है। जई वाले खेत में एक सूराख और भी उसे मिला।

चर मूरख प्यारे की तलाश में निकला। प्यारे ने नाज खलिहान में रख दिया था और अब जंगल के पेड़ गिरा रहा था। बात यह थी कि दोनों भाई बोले—"घर में तो जगह कम है। इससे तुम पेड़ गिराकर कुछ जगह साफ कर डालो और वहां हमारे लिए नये मकान बनवाकर खड़े करो।"

चर दौड़ा जंगल में पहुंचा। वहां दरख्तों की टह-नियों से लुककर प्यारे के काम में अड़चन डालने लगा। प्यारे ने उस दरख्त को जड़ से काट लिया था और वह धरती पर गिरने वाला था, पर देखता क्या है कि दरख्त गिरा तो नहीं, बलिक दूसरे पेड़ की शाखों से उलझ कर रह गया।

प्यारे ने इसपर बल्ली की मदद से उसे जड़ से कुछ सरकाया। तब कहीं पेड़ धरती पर आकर गिरा। और पेड़ों के गिराने में भी ऐसे ही बीती।

उम्मीद थी कि छोटे-मोटे पचास पेड़ तो आज ही गिराऊंगा, पर दस-एक भी नहीं हुए कि सांझ हो चली और वह थककर चूर हो गया। पर उस बन्दे ने काम नहीं छोड़ा, चिपटा ही रहा। आखिर कमर इतनी दुखने लगी कि खड़े रहना मुश्किल था। तब कुल्हाड़ी पेड़ में

लगी छोड़ धरती पर बैठ कर वह दम लेने लगा।

चर ने देखा तो वह बड़ा खुश हुआ। सोचा, आखिर अब आकर थका तो। अब आगे भला क्या काम उठायेगा। चलो, मुझे भी सुस्ताने का मौका मिल गया।

यह सोच चर पेड़ की शाख पर फैलकर आराम से सो गया। चैन की सांस ली। थोड़ी ही देर में प्यारे उठ खड़ा हुआ और कुल्हाड़ी खींच सिर के ऊपर से घुमा कर जोर से जो मारी कि एकदम पेड़ ढहता हुआ आ गिरा। चर को यह आस न थी। उसे संभलने का समय नहीं मिल पाया और पेड़ गिरा तो उसके पंजे उसमें फंसे रह गये। प्यारे एक-एककर पेड़ की टहनियां काटने लगा। इतने में देखता क्या है कि दरख्त से चिपटे यह हजरत जीते-जागते वहां लटके हुए हैं। प्यारे को अचम्भा हुआ। बोला—"क्योंजी, फिर तुम यहां आ पहुंचे ?"

चर बोला—"जी, मैं वह नहीं, दूसरा हूँ। अब तक तुम्हारे भाई धनवीर के साथ था।"

"जो हो। चलो, तुम्हें अपने कर्मों का फल मिला।"

यह कहकर कुल्हाड़ी घुमा उसकी मूठ उसके सिर पर दे मारनेवाला ही था कि वह चर दया के लिए गिड़गिड़ाने लगा।

बोला—"मुझे मारो नहीं, जो कहोगे, मैं तुम्हारे लिए वही करूंगा।"

"तुम क्या कर सकते हो ?"

"मैं अशर्फी बना सकता हूँ। जितनी कहो उतनी।"

"अच्छी बात है, बना कर दिखाओ।"

चर अशर्फी बनाने की तरकीब बताने लगा। बोला--"उस बड़ के कुछ पत्ते हाथ में ले लीजिये और फिर मसलिये। धरती पर गिरकर बस अर्शाफियां-ही-अर्शाफियां बन जायंगी।"

प्यारे ने कुछ पत्ते लिये और हाथों से मला। देखता क्या है कि हाथों से अर्शाफियों की धार-की-धार गिर रही है।



अर्शाफियाँ-ही-अर्शाफियाँ बन गईं।

चर बोला—"अब मुझे जाने दीजिये।"

प्यारे ने उसको पेड़ से छुड़ा दिया। बोला—"अच्छी बात है, जाओ भगवान तुम्हारा भला करे!"

भगवान का नाम आना था कि पानी में पत्थर की तरह वह चर धरती में गिरकर अन्तर्धान हो गया। बस एक सूराख रह गया।

: ६ :

दोनों भाइयों के लिए हवेलियां खड़ी हो गईं और अलग-अलग मकान में रहने लगे। प्यारे ने खेत की कटाई-लुनाई निबटा कर तैयारी की और एक त्यौहार के रोज भाइयों को अपने घर खाने का निमंत्रण दिया, पर दोनों भाई उसके घर आने को राजी नहीं हुए।

भाई लोग नहीं आये तो प्यारे ने गांव के और मर्द-औरतों को जिमाया। बड़ी हंसी-खुशी रही। दावत के बाद प्यारे बाहर के चौक में आया। वहां स्त्रियां मगन होकर नाच रही थीं। प्यारे आकर उनसे बोला, "वाह-वाह, एक नाच, भाई, हमारे नाम का हो जाय। उसके बाद मैं ऐसी चीज तुम्हें बांटूं कि पहले जिन्दगी में तुमने देखी भी न हो।"

स्त्रियां और भी हंसीं और खुश-खुश प्यारे की तारीफ में गाना गाती नाचने लगीं। उसके बाद बोलीं—"लाओ देखें, तुम्हारी वह क्या चीज है?"

प्यारे ने कहा—"अभी लो।"

कहकर उसने नाज भरी एक डलिया ली और चला जंगल की तरफ। स्त्रियां हंसने लगीं। बोलीं—"है असल मूरख!" उसके बाद फिर अपने इधर-उधर की चर्चा करने लगीं।

इतने में देखती क्या हैं कि प्यारे डलिया लिये जंगल की तरफ से भागा चला आ रहा है। डलिया भारी मालूम होती है और किसी चीज से भरी हुई है।

प्यारे ने एक मुट्ठी अशर्फियां लीं और बीच में बखेर दीं। बस सोच लीजिए कि कैसी भगदड़ वहां मची होगी। थोड़ी देर में उसने सब अशर्फियां वहीं फैंक बखेरीं। उसके बाद लोग फिर और मांगने लगे।

पर प्यारे बोला—"अब तो मेरे पास और रही नहीं। फिर किसी वक्त और सही। आओ, नाचें-कूदें। और क्यों भई, तुम लोग क्यों रुक गईं? अपना गाना जारी रक्खो न?"

स्त्रियां पहले की भांति गाने लगीं।

प्यारे बोला—"नहीं जी, ये तो तुम्हारे गीत कुछ बढ़िया नहीं हैं।"

स्त्रियां बोलीं—"खूब! बढ़िया गीत भला हम और कहां से लायें?"

प्यारे बोला—"देखो, मैं बताता हूँ।"

कहकर प्यारे खलिहान की तरफ बढ़ा। एक पूला

लिया, नाज के दाने उसके अलग किये और फिर सकेर कर उसे धरती पर जमा कर रख दिया। फिर उसने चर का बताया मंत्र पढ़ा। पढ़ते ही हरएक सींक की जगह एक सिपाही लैस खड़ा हो गया। ढोल-ताशे बजने लगे और तुरही बोलने लगी। प्यारे ने सिपाहियों को हुक्म दिया कि गा-बजा कर सबको खुश करो। इसके बाद आगे-आगे वह और पीछे-पीछे बैण्ड-पार्टी, ऐसे गली-गली जुलूस घूमा। लोगों को बड़ा विनोद मालूम हुआ। सिपाही खूब गाते-बजाते थे। अन्त में प्यारे ने कहा, "अब कोई साथ मत आना।" कहकर सिपाहियों को अलग एक तरफ ले गया और फिर सबको सींक बना कर पूले में बांध अपनी जगह डाल दिया।

: ७ :

अगले दिन फौजी बलजीत के कान में इस बात की खबर पड़ी। वह भाई के पास आया। बोला—"प्यारे, यह बताओ कि वे सिपाही तुमने कैसे बनाये थे और फिर उन्हें वहां ले जाकर क्या किया?"

प्यारे ने पूछा—"उससे तुम्हें भला क्या मतलब?"

"मतलब? क्यों? अरे, सिपाही हों तो कोई कुछ भी कर सकता है। उनसे राज का राज जो जीता जा सकता है।"

प्यारे अचरज में बोला—"अच्छा, सचमुच?

पहले से तुमने क्यों नहीं बताया ? लो, जितने कहो उतने सिपाही बनाकर मैं तुम्हें दिये देता हूं। सिपाहियों की क्या कमी ?"

खलिहान में जाकर प्यारे सिपाही बनाने लगा। इतने सिपाही बना दिये कि कुल मैदान उनसे भर गया।

फौजी बलजीत ने फौरन उन सब टुकड़ियों का कमान संभाला, उन्हें जमा किया, तरतीब दी और सबको साथ ले जंग का मोर्चा लेने चल दिया।

बलजीत का जाना था कि धनवीर आ पहुँचा। उसे भी कल की बात की खबर लगी थी। आकर भाई से बोला--"भाई, बताओ, अशर्फियां तुमने कहां और कैसे पाईं ? मेरे पास जरा शुरू करने को भी कुछ धन हो जाता तो उससे मैं तमाम दुनिया का पैसा खींच कर दिखा देता।"

प्यारे अचरज में भरकर बोला--"अरे, तुमने पहले मुझे क्यों नहीं बताया ? जितनी कहो, उतनी अशर्फियां मैं तुम्हें बनाये देता हूं।"

दोनों जंगल में आये। यहां प्यारे ने बड़ के पत्ते हाथ में लिये और मल कर सोने की धार धरती पर छोड़ दी। देखते-देखते अशर्फियों का अंबार लग गया।

व्यापारी धनवीर ने वह सारा गाड़ीभर धन बटोरा, भरा और व्यापार करने चल दिया।

ऐसे दोनों भाई चले गये। बलजीत युद्ध जीतने

गया, धनवीर लेन-देन से धन बढ़ाने। जंगी बलजीत ने तो एक राज्य जीत लिया और धनवीर ने व्यापार में बहुत धन कमा लिया।

फिर दोनों भाई मिले तो अपनी-अपनी कहानी सुनाने लगे। बलजीत ने बताया कि कैसे मुझे सिपाही मिले और धनवीर ने अपनी अशर्फियां मिलने की बात बताई।

बलजीत बोला—"धनवीर, राज्य तो मैंने जीत लिया है और ठाठ-बाट से रहता हूं, पर सिपाहियों को रखने के लिए काफी पैसा मेरे पास नहीं है।"

धनवीर ने कहा—"धन तो मेरे पास अकूत है। पर मुश्किल यह है कि उसकी रखवाली के लिए सिपाही नहीं हैं।"

जंगी बलजीत ने कहा—"एक काम करें—प्यारे के पास चलें। मैं तो कहूँगा कि तुम्हारे धन की रखवाली के लिए तुम्हें वह कुछ सिपाही बनाकर दे दे और तुम कहना कि मेरे सिपाहियों के गुजारे के लिए धन की जरूरत है, मुझे अशर्फियां बना दे।"

आपस में यह ठहराकर दोनों प्यारे के पास गये।

बलजीत के सिपाही बनाने की कहने पर प्यारे ने सिर हिला दिया। बोला—"नहीं, अब मैं और सिपाही नहीं बना कर दूंगा।"

"लेकिन तुमने वचन दिया था कि बना देंगे।"

"हां, दिया था। लेकिन अब और नहीं बनाऊंगा।"

"बड़े मूरख हो। क्यों नहीं बनाओगे ?"

"मैंने सुना है, तुम्हारे सिपाहियों ने एक आदमी की जान ले ली। उसी दिन एक औरत गाड़ी में बैठी जा रही थी। मैंने कहा, 'क्या बात है, कोई मर गया है ?' बोली कि मेरे पति को लड़ाई में बलजीत के सिपाहियों ने मार डाला है। मैं तो समझता था, सिपाही अपना गाना-बजाना किया करेंगे और लोगों का मन बहलायेंगे, पर उन्होंने तो आदमी की हत्या कर डाली ! अब मैं और सिपाही बना कर नहीं दूंगा।"

प्यारे अपनी बात से डिगा नहीं और सिपाही नहीं बनाये।

धनी धनवीर ने कुछ और सोना बना देने को कहा। लेकिन उसपर प्यारे ने सिर हिला दिया। कहा—"नहीं, अब मैं सोना भी नहीं बनाऊँगा।"

"तुमने तो वायदा किया था ?"

"किया था, लेकिन अब मैं नहीं बनाता।"

"भला क्यों, मूरख ?"

"क्योंकि तुम्हारी अशर्फियों ने हमारे हरिया की बेटी की दुधार गाय हर ली है।"

"कैसे ?"

"कैसे क्या, उस दिन हरीचन्द की धेवती हमारे दूध मांगने आई। मैंने कहा—'क्यों, तुम्हारी गाय क्या

हुई ?' बोली—'महाजन धनवीर का कारिंदा आया था। उसने सोने के तीन सिक्के अम्मा को दिये। अम्मा ने गाय उसे दे दी। अब घर में दूध कहां रक्खा है ?' मैं तो समझता था कि सोने की मुहरें लेकर तुम अपना और लोगों का जी-बहलाव करोगे। पर उनसे तो तुम बच्चों का दूध छीनने लगे हो।"

दोनों भाई अपने मुंह लौट गये। जाते-जाते आपस में सलाह करने लगे कि कैसे अपनी मुश्किल हल करनी चाहिए।

बलजीत ने कहा—"सुनो, मैं बताता हूं। एक काम करो। तुम तो सिपाहियों के लिए मुझे धन दो और मैं तुम्हें अपना आधा राज्य दिये देता हूं। बस, फिर धन की रक्षा के लिए काफी सिपाही भी तुम्हारे पास हो जायंगे।"

धनवीर इसमें राजी हो गया।

दोनों भाइयों ने आपस में बंटवारा कर लिया। इस तरह वे दोनों ही राजा बन गये। दोनों के पास रियासत हो गई और किसीके पास धन की कमी न रही।

: ८ :

प्यारे देहात के घर ही रहा। गूंगी बहन के साथ खेत में काम करता और माता-पिता को पालता था।

एक दिन ऐसा हुआ कि उनके पालतू कुत्ते को

कहीं से खाज लग गई। वह ऐसा कमज़ोर होने लगा कि जीने की आस ही न रही। बिल्कुल मराऊ हो आया। प्यारे को उस पर दया आई। बहन से कुछ रोटी मांग टोपी में रख कुत्ते को डालने वह बाहर आया। टोपी फटी थी, सो टुकड़ा जो कुत्ते को फैंका तो उसके साथ उस जड़ी की एक जड़ भी आ गिरी। कुत्ते ने रोटी खाई और साथ में वह जड़ भी खा गया। खाना था कि वह तो एकदम चंगा हो गया। सब रोग जाता रहा और वह उछल-कूद मचाने लगा।

मां-बाप को यह देख बड़ा अचम्भा हुआ। पूछने लगे--"कुत्ते का रोग तुमने कैसे छिन में हर लिया?"

प्यारे बोला--"मेरे पास एक जड़ी की दो जड़ थीं। उनमें से एक कोई खा ले तो सब रोग मिट जायं। एक इस कुत्ते ने खाली है।"

उसी समय की बात है कि राजा की बेटी बीमार पड़ी। राजा ने गांव-शहर में सब जगह एलान कर दिया कि जो मेरी बेटी को आराम कर देगा उसे खूब इनाम मिलेगा और वह कुंवारा हुआ तो बेटी उसे ब्याह दी जायगी। दूसरे गांवों की तरह प्यारे के गांव में भी यह एलान हुआ।

सुनकर प्यारे चलने को तैयार हुआ। हाथ-मुंह धोया, कपड़े पहने, पर द्वार से बाहर होना था कि एक भिखारिन मिली। उसका हाथ गल रहा था

और वह लूली हुई जा रही थी। बोली—"भैया, मैंने सुना है कि तुम रोगों को आराम कर देते हो। बड़ी दया हो कि मेरी इस बांह को आराम कर दो। मुझसे इसके मारे कुछ भी करते-धरते नहीं बनता है।"

प्यारे ने बाकी बची जड़ी निकाली और भिखारिन को दे दी। जड़ी का मुंह के नीचे उतारना था कि भिखारिन अच्छी-भली हो गई।

इतने में अन्दर से प्यारे के मां-बाप भी राजा के यहां साथ चलने के लिए आये। उन्होंने सुना कि जड़ी तो इस मूरख ने गंवा डाली है, अब राजा की बेटी को काहे से आराम होगा ? सुनकर दोनों प्यारे को खूब झिड़कने लगे।

प्यारे के मन में राजा की बेटी के लिए भी दुःख था। बैलगाड़ी में जोत, पुआल से उसकी बैठक मुलायम बना, उसपर सवार हो, प्यारे आगे बढ़ा।

चलता-चलता राजा के महल में आया। पर महल की देहली पर उसका पांव रखना था कि राज-कन्या को एकदम आराम हो गया।

राजा उसपर बड़ा खुश और विस्मित हुआ। प्यारे का आदर-सत्कार किया और कीमती कपड़े दिये। बोला—"अब तुम ही मेरे जमाई हो।"

राजकुमारी का मूरख के साथ विवाह हो गया। उसके थोड़े अरसे के बाद राजा का देहांत हो गया और

मूरख ही राजा बना ।

इस तरह अब तीनों भाई राजा हो गये।

: ९ :

तीनों अपने-अपने राज्य में राज करने लगे। जेठा बलजीत खूब कामयाब हुआ। उसने अपना राज्य काफ़ी बढ़ा लिया।

धनवीर वैश्य भी अपने आनन्द से रहता था। प्यारे से जो रकम पाई थी, उसमें से उसने रत्ती भी नहीं खोया था, बल्कि उस दौलत को खूब बढ़ा-चढ़ा लिया था।

उधर उस मूरख प्यारे की भी हालत बुरी नहीं थी। ससुर के क्रिया-कर्म के अनंतर उसने क्या किया कि राज की सब पोशाक ली और बीवी से कहा कि इसे बक्सों में बंद करके रख दो। शरीर पर गाढ़े का कुर्त्ता पहना और काम पर चल पड़ा।

मां-बाप को और अपनी गूंगी बहन को भी पास ले आया और पहले की तरह खेत पर काम करने लगा।

लोग बोले—"लेकिन आप तो राजा हैं।"

प्यारे बोला—"हां, पर राजा भी तो खाने को चाहता है न ?"

एक दिन मंत्री आया। बोला—"तनखा देने के लिए खजाने में पैसा नहीं है।"

"अच्छी बात है, तनखा मत दो।"

"ऐसे कोई नौकरी नहीं करेगा।"

"ठीक है। मत करने दो। ऐसे उन्हें काम का और भी वक्त निकल आयगा। चलो, सब खाद ढोयें। कितना घूरा जगह-जगह पड़ा है। यह सब खाद है कि नहीं ?"

लोग राजा के पास अपने मुकदमे लेकर आये। एक बोला--"इसने मेरा धन चुराया है।"

प्यारे ने कहा--"अच्छी बात है। चुराने से तो मालूम होता है कि उसके पास कुछ था नहीं।"

इस तरह सब लोग जानते गये कि प्यारेसिंह राजा मूरख है।

नतीजा यह हुआ कि चतुर-सयाने जितने थे, सब प्यारे का राज छोड़कर चले गये। बस मूरख-मूरख रह गये।

किसीके पास कोई पैसा-सिक्का नहीं था। सब रहते थे और काम करते थे। भरपेट खाते और दूसरों को खिलाकर खुश रहते थे।

: १० :

उधर पाताल-लोक में शैतान बाबा इंतजार में थे कि कुछ खबर मिले। तीनों भाइयों की बरबादी को तीन चर गये थे। पर मुद्दत हुई, उनकी खबर कोई

नहीं आई । पता लगाने वह बाबा खुद नर-लोक आये। बहुत खोज-बीन की । पर वे तीन चर तो कहीं मिले नहीं । मिले तो उनकी जगह तीन सूराख मिले ।

सोचा कि मालूम होता है वे तीनों नाकाम रहे और विपत के शिकार हुए । चलो, अब मैं उन तीनों को खुद ही भुगतता हूं ।

यह मन में धार वह उन तीनों की तलाश में चला ।

पहले वह राजा बलजीत के यहां गया । पर ऐसे नहीं गया । भेस बदल कर गया । एक फौजी सरदार का बाना उसने बनाया और घोड़ागाड़ी पर सवार महल पर पहुंचा । वहां जाकर बोला—"हे राजा बलजीत, सुना है कि तुम बड़े बहादुर हो । मैंने भी कई युद्ध देखे हैं। जंगी मैदान का मुझे अनुभव है और मैं तुम्हारी सेवा में काम आना चाहता हूं ।"

राजा बलजीत ने उससे पूछताछ की और सवाल किये। देखा कि आदमी होशियार है। उसे नौकरी में रख लिया और सिपहसालार बना दिया ।

इन नये सेनापति ने राजा बलजीत को बताया कि कैसे एक मजबूत सेना तैयार करनी चाहिए, ऐसी कि कोई न हरा सके ।

राजा बलजीत ने इस पर गौर किया और उसकी मंजूरी का हुक्म दे दिया । तैयारी होते ही पड़ोस

के राजा से लड़ाई ठान दी गई। एक ही धावे में दुश्मन की आधी फौज खेत रही। कुछ कट-कटा गये, बहुत से ध्वंस हो गये और बाकी भाग निकले। दुश्मन ऐसा भयभीत हुआ कि हथियार डाल दिये और सारा राज्य अपना सौंप दिया। राजा बलजीत अपनी विजय पर खुश हुआ। बोला—"अच्छा, अब हिंदुस्तान की सल्तनत की बारी आनी चाहिए।"

बलजीत हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करने आया। खयाल था कि पहले राजा की तरह इसे भी हाथों-हाथ गिराऊंगा। पर हिंदुस्तान के राजा ने बलजीत की फौज को पास न फटकने दिया। पहले ही हवा के रास्ते अपनी जनानी पलटन को भेज दिया कि बलजीत की फौज पर जा आग के बम बरसाओ। जनानी पलटन ने वहां जाकर ऐसी आग की वर्षा की कि पतंगों की तरह बलजीत की फौज के लोग भुनने लगे। यह देख फौज भाग निकली और राजा बलजीत अकेला ही रह गया। हिंदुस्तान के बादशाह ने बलजीत का इलाका भी हथिया लिया। बलजीत ने जैसे-तैसे भाग कर जान बचाई।

सबसे जेठे को निबटाकर शैतान अब राजा धनवीर के पास पहुंचा। इस बार व्यापारी का उसने भेस बनाया और धनवीर की राजधानी में जाकर डेरा डाला। वहां अपनी फर्म खोल दी और लगा पैसा जुटाने।

हर चीज ऊंचे दाम उसने खरीदनी शुरू की। ज्यादा कीमत पाने के लिए दौड़-दौड़कर सब लोग उसके पास पहुंचने लगे। बदले में लोगों के पास इतना सिक्का फैल गया कि सब-के-सब अपना पूरा कर वक्त पर अदा कर देते थे और पहला बकाया भी चुका दिया था। राजा धनवीर इसपर खूब खुश हुआ।

धनवीर राजा ने नये नक्शे बनाये और एक नया महल खड़ा करने का हुक्म दिया। एलान कर दिया कि लोग लकड़ी और पत्थर लाकर दें और मजदूरी के लिए भी लोगों की जरूरत है। धनवीर का ख़याल था कि लोग झुंड-के-झुंड आयंगे। पर अचरज से देखता क्या है कि पत्थर और लकड़ी सिर पर ले-लेकर सब लोग उस व्यापारी के पास पहुंच रहे हैं और मजदूर भी उधर ही जाते हैं। राजा ने दर ऊंची चढ़ा दी, लेकिन व्यापारी ने उससे भी सवाई कर दी।

नतीजा यह कि राजा के महल पर सन्नाटा रहने लगा। नये महल की शुरूआत भी नहीं हो सकी।

धनवीर के मन में एक नया बाग तैयार करने की आई। बारिश बीतते ही उसने लोगों को बुलाया कि आयें और बाग तैयार करें, पर कोई न फटका। सब लोग उस व्यापारी का एक तालाब खोदकर तैयार करने में लगे थे। जाड़ों के दिन आये और धनवीर को कुछ मुलायम पशमीनों की जरूरत हुई। आदमी

खरीदने बाजार भेजे, लेकिन वे खाली हाथ लौट आये। बोले कि बाजार में तो ये चीजें मिलती ही नहीं हैं। सब-की-सब व्यापारी ने ले ली हैं।

धनवीर ने कुछ उम्दा घोड़े खरीदने चाहे। भेजा खरीदारों को। लेकिन उन्होंने खबर दी कि अच्छे-अच्छे जानवर तो सब व्यापारी ने खरीद लिये हैं।

इस तरह राजा का सब कारोबार रुकने लगा। कोई उसके लिए काम करने को राजी न होता था।

राजा के पास इतना धन जमा हो गया कि समझ न आता था, कहां उस सबको भर कर रक्खा जाय। जिंदगी ऐसे दूभर होने लगी। नये मनसूबे बनाने तो उसके छूट ही गये। अब तो गुजारे तक की मुसीबत होने लगी। उसे खाने के भी लाले पड़ गये।

इस पर राजा धनवीर को बड़ी झुंझलाहट हुई। उसने व्यापारी को देश-निकाला दे दिया। पर व्यापारी वहां से गया तो देश की हद के पार ही एक जगह जाकर जम बैठा। यहां भी उसने पहले की तरकीब की। धनवीर बड़ा हैरान था। उसे कुछ समझ न पड़ता था कि क्या किया जाय।

इसी वक्त बलजीत उसके पास आया। बोला—"हिंदुस्तान के राजा ने मुझे हरा दिया है। मेरी कुछ सहायता करो।"

लेकिन यहां धनवीर गले तक अपनी मुसीबतों

में डूबा था। बोला––"यहां मुझे ही दो दिन से खाने को नहीं मिला, भाई। तुम अपनी कहते हो!"

: ११ :

इस तरह दोनों भाइयों को ठिकाने लगा अब शैतान मूरखराज की तरफ मुड़ा। उसने फौजी जनरल का वेश बनाया और आकर मूरख को समझाया कि राजा के पास एक फौज जरूर रहनी चाहिए।

मूरख प्यारे ने उसकी बात सुनी। बोला––"अच्छी बात है। बनाओ फौज और उन्हें अच्छे-अच्छे गाने सिखाओ। गाती-बजाती फौज जरूर बड़ी भली मालूम होगी।"

राजा की आज्ञा पाकर वह शैतान प्यारे के तमाम राज में फौज की भरती करता घूमने लगा। कहने लगा कि सिपाही बनोगे तो मौज रहेगी।

लोग सुनकर हंसते थे। पर कोई भरती न होता था।

इसपर शैतान आया और प्यारे राजा से बोला––"आपकी प्रजा तो बड़ी मूरख है। अपने मन से कोई भरती नहीं होता है। सुनिए, उन्हें भरती कराना होगा।"

प्यारे बोला––"अच्छी बात है। कोशिश करो।"

शैतान ने जाहिर एलान कर दिया कि सबको भरती होना होगा। जो इंकार करेगा, राजा के यहां से

उसे मौत की सजा दी जायगी । लोग सुनकर बोले—"तुम कहते हो कि भरती नहीं होंगे तो हमें मौत की सजा मिलेगी । लेकिन भरती होंगे तो हमने सुना है कि सिपाही भरती होकर लड़ाई में मारे जाते हैं ।"

"हां, ऐसा कभी होता तो है ।"

यह सुना तो लोग और हठ पकड़ गये । बोले—"तब तो हम नहीं भरती होंगे । हर हालत में मरना ठहरा ही तो बाहर से घर मरना अच्छा है ।"

"तुम मूरख हो, बेवकूफ हो ।" शैतान बोला, "अरे, सिपाही तो मरे या नहीं भी मरे, लेकिन भरती नहीं होंगे तो फिर राजा के हाथ तुम्हारी मौत पक्की है ।"

सुनकर लोग झमेले में पड़ गये। मूरखराज के पास पूछताछ करने पहुंचे । उनकी बात सुन कर प्यारे बोला—"मैं अकेला तुम सबको कैसे मार दूंगा ? मूरख न होता तो मैं तुम्हें समझा सकता था। पर सच यह है कि मेरी खुद की भी समझ में यह मामला नहीं आता है ।"

लोग बोले—"तो हम भरती नहीं होंगे ।"

प्यारे ने कहा—"अच्छी बात है, मत होओ ।"

लोग जनरल के पास गये और भरती होने से इंकार कर दिया ।

शैतान ने देखा कि यहां तो उसकी दाल गलती

नहीं। उसने फतेहिस्तान के शाह के पास जाकर साठ-गांठ शुरू की।

फतेहिस्तान के शाह ने लड़ाई की तैयारी शुरू कर दी। बड़ी फौज इकट्ठी की। बारूद और तोप और बंदूक जमा की और दुश्मन के राज पर चढ़ाई बोल दी। फौज कूच करती हुई हद लांघ उस राज के अंदर दाखिल हो गई।

प्रजा के लोग अपने प्यारे राजा के पास आये। बोले—"फतेहिस्तान के शाह ने चढ़ाई कर दी है।"

प्यारे बोला—"अच्छी बात है। उन्हें आने दो।"

हद के अंदर आकर फतेहिस्तान के नवाब ने पल्टन की एक टुकड़ी आगे भेजी कि देखो, दुश्मन की फौज कहां छावनी डाले हुए है, पर इधर-उधर देखा-छाना, दुश्मन की फौज का कोई पता-निशान न दीखता था। शाह इंतजार में रहे कि अब कहीं से फौज का सुराग मिले, अब मिले। पर फौज के नाम एक आदमी भी नजर नहीं आया कि जिससे लड़ा जाय। इसपर फतेहिस्तान के राजा ने हुक्म दिया कि जाओ, बढ़कर गांवों पर कब्जा कर लो। सिपाही चलते हुए एक गांव पर पहुंचे। गांव के मर्द-औरत सब मिलकर अचरज से सिपाहियों को देखने लगे। सिपाहियों ने उनका गल्ला और चौपाये झपट कर उनपर काबू करना शुरू कर दिया। पर उन लोगों ने कोई बाधा नहीं डाली,

बल्कि खुद सब बताकर आसानी कर दी। फिर सिपाही दूसरे गांव गये। वहां भी यही हुआ। इसी तरह दिन-भर वे बढ़ते गये। फिर अगले दिन भी सब जगह वही बात हुई। लोग सब माल यों ही ले-लेने देते थे, कोई विरोध नहीं करता था, बल्कि सिपाहियों से लोग कहते थे कि बड़ी खुशी की बात है, आओ न, हमारे साथ तुम भी रहो-सहो। सभी जगह लोगों ने सिपाहियों का स्वागत-सत्कार किया और अपने साथ आकर रहने का न्यौता दिया। सो सिपाहियों का जी इस लूट-मार के काम में लगा नहीं। वे उकता गए। शाह के पास आकर बोले—"यहां हम नहीं लड़ेंगे, कहीं और का हुक्म दीजिए। लड़ाई तो ठीक है, पर यह भी कोई लड़ाई है! यह तो दूध में छुरी भोंकने के समान है। यहां अब बिल्कुल नहीं लड़ सकते हैं।"

शाह सुनकर बड़े झल्लाये। बोले—"जाओ, सारा राज्य तहस-नहस कर डालो। गांव लूट लो, मकान जला दो और नाज फूंक डालो। चौपाये मार कर खत्म कर दो। अगर मेरा हुक्म न माना तो एक-एक को फांसी दे दूंगा।"

सिपाही मारे डर के नवाब के हुक्म के मुताबिक करने लगे। मकानों में आग लगाई और गल्ला फूंका और गायों के गले काटने लगे। पर उस राजा की मूरख प्रजा ने अब भी मुकाबला नहीं किया। बस, वे

आंसू गिराते थे।

आखिर सिपाहियों का मन इस अत्याचार को और नहीं झेल सका। आगे बढ़ने से उन्होंने इंकार कर दिया। इस तरह फौज तितर-बितर हो गई और भाग गई।

: १२ :

शैतान की यह युक्ति भी काम नहीं आई। सिपाहियों को लेकर प्यारे का कुछ नहीं बिगाड़ा जा सका। उसने दूसरी राह पकड़ी। इस बार एक भले सौदागर के वेश में प्यारेसिंह के राज में पहुंचा और वहां घर बसाकर बैठ गया। सोचा कि ताकत के जोर से नहीं तो पैसे के जोर से तो वह काबू में आ ही जायगा।

जाकर राजा से बोला—"मैं आपकी भलाई करने आया हूं। देखिए, एक नफे की और उपकार की बात मैं कहता हूं। असल में आपको समझदारी सीखनी चाहिए। मेरा इरादा है कि आपके राज्य में एक बड़ा फर्म खोलूं और व्यापार का संगठन करूं।"

प्यारे राजा बोला—"अच्छी तो बात है। मरजी हो तो आइए। हम लोगों के साथ रहिए।"

अगले दिन वह भला व्यापारी चौक में पहुंचा। सोने की मोहरों का थैला पास में रख लिया। वहां

बीच चौक में खड़ा होकर बोला—"लोगो, सुनो! देखो, इस नक्शे के मुताबिक मेरे लिए एक मकान तैयार किया जाना है। मैं बताता जाऊंगा, वैसे काम करते जाना। काम के बदले सोने की मोहरें तुम्हें मिलेंगी।"

यह कह कर बोरे में भरी मोहरें उसने लोगों को दिखाईं।

उस राज्य की प्रजा के मूरख लोग बड़े अचरज में पड़े। उनके यहां धातु के सिक्के का चलन नहीं था। अपना माल अदल-बदल लेते थे और महनत करके लेना-देना चुकाते थे। सोने की मोहरों को वे अचंभे से देखते रह गये।"

अपना माल लाकर वे देने लगे या महनत करने को राजी हुए। एवज में कुछ मोहरें ले लेते थे।

यह देख वह बड़ा खुश हुआ। मन-ही-मन कहने लगा कि इस बार मामला ठीक चल रहा है। अब इस प्यारे को भी चंगुल में लिया।

पर वे लोग थे मूरख। सोने की मोहरें पाईं कि उन्होंने अपनी औरतों को दे दीं। औरतों ने गहने बनवा लिये। लड़कियां उसके जेवर गले में पहनतीं और भांति-भांति के आकार में बनाकर अपने जूड़ों में बांधतीं। होते-होते गली-सड़क में बालक उन सोने के टुकड़ों से खेलने लगे। अब किसी को उनकी जरूरत

न रह गई थी। सो सबने उन्हें लेना बन्द कर दिया।

कोई बंदा आगे काम पर न आया। उसे खाने के लाले पड़ने लगे। आखिर मारे भूख के वह भला आदमी गांव में घूमने निकला कि कहीं कुछ सिक्का देकर खाना मिल जाय। एक घर पर जाकर उसने मोहरें देकर रोटी लेनी चाही, लेकिन घर में से स्त्री बोली—"मोहर का मैं क्या करूंगी! यह तो वैसे ही मेरे घर में बहुतेरी पड़ी हैं।"

फिर दूसरे मकान पर जाकर उसने कोशिश की।

फिर एक किसान के घर जाकर उसने आजमाया। पर किसीको भी सिक्के की जरूरत नहीं थी।

आखिर शैतान भूखे पेट ही रात को सो गया।

यह बात प्यारे के पास पहुंची। लोग आये और पूछने लगे, "बताओ, हम क्या करें?"

प्यारे ने पूरी बात सुनी। बोला, "अच्छी बात है, उसके पेट पालने का बन्दोबस्त तो हमें करना ही चाहिए। ऐसा करो कि उसकी बारी बांध लो। गांव के चौपाये उसे चराने दे दिये जायं और एक-एक दिन एक-एक घर से उसे खाने को मिल जाया करे।

ऐसा ही हुआ। वह बारी-बारी एक-एक घर से रोटी पाकर पलने लगा। होते-होते प्यारे के घर की भी बारी आई। शैतान घर के अन्दर खाना खाने के लिए पहुंचा तो रसोई में वह गूंगी पीतमबहन सब तैयारी कर

रही थी।

पर वह चतुर थी और अनुभवी थी। जो काम-चोर न होते, जिनकी हथेली खुरदरी और सख्त होती, उन्हें वह परोस कर देती थी। औरों को अलग और पीछे बैठाया जाता था।

वह बूढ़ा शैतान आकर रसोई में थाली पर बैठ गया। पर गूंगी लड़की पकड़कर उसका हाथ देखने लगी। देखा तो उसकी हथेलियां मुलायम और चिकनी थीं। वह गुस्से में बड़बड़ाने लगी और खींचकर उसे पटड़े से उठा अलग कर दिया।

प्यारे राजा की स्त्री बोली, "इस बात पर नाराज न होना। ननदजी ऐसे आदमी को थाली-पटड़े पर नहीं बैठातीं, जिसके हाथ काम से खुरदरे न हों। थोड़ा सबर कीजिये। लोग जब खा चुकेंगे तो पीछे आपको मिलेगा।"

बूढ़े शैतान को इसपर बड़ी झुंझलाहट हुई कि राजा के घर में आकर उसका इस तरह अपमान किया गया। वह मूरखराज से बोला, "तुम्हारे राज्य में यह क्या बेवकूफी का कायदा है कि सबको हाथ से काम करना पड़े। अक्लमंद लोग किससे काम करते हैं, कुछ जानते हो?"

प्यारे बोला, "हम लोग मूरख हैं! कैसे वह सब जानेंगे। हम तो अपना ज्यादातर काम हाथ से और

जिस्म से करते हैं ।"

"तभी तो तुम लोग मूरख हो, लेकिन मैं बताऊंगा कि दिमाग से कैसे काम किया जाता है, तब तुम्हें पता चलेगा कि हाथ से काम करने के बजाय सिर से काम करने से ज्यादा फायदा है । लेकिन एक बात है, दिमाग का काम आसान नहीं होता । मेरे हाथों पर दाग नहीं हैं, सो तुम मुझे थाली पर नहीं बैठाते हो । लेकिन यह तुमको नहीं पता कि दिमाग का काम उससे सौ गुना कठिन होता है । कभी तो सिर उसमें फटने जैसा हो जाता है ।"

प्यारे सुनकर जैसे सोच में पड़ गया । बोला, "तो बाबा, इतनी तकलीफ क्यों कोई अपने को दे ? इससे क्या यह बेहतर न होगा कि हाथ और बदन के सहारे मोटा ही काम कर लिया जाय, जिससे सिर सही रहे ?"

पर शैतान बोला, "यह सब हमें मूरख लोगों की खातिर करना होता है । सिर से काम लेने की वजह से अब मैं तुम्हें कुछ सिखा तो सकता हूं ।"

प्यारे अचंभे में भरकर बोला, "जरूर सिखाइए, जिससे हाथ दुःख आये तो जी-बहलाव के लिए हम अपने सिर भी कभी इस्तेमाल कर लिया करें ।"

प्यारे की राजधानी के नगर में एक ऊंची मीनार थी । काफी सीढ़ियां चढ़कर उसकी चोटी पर पहुंचना

होता था। वहां एक लालटेन थी। प्यारे उन भलेमानस को वहीं चोटी पर ले गया कि सब लोग उनके दर्शन कर सकें।

वह बाबा उस ऊंची जगह पर जम कर बैठ गये और बोलने लगे। लोग सुनने के लिए नीचे आये। उनका खयाल था कि उपदेशक महोदय हाथों को बिना इस्तेमाल में लाये सचमुच सिर से काम करने का तरीका बतायेंगे। पर असल में जो उन्होंने बताया वह तो यह था कि बिना काम किये कैसे रहा जा सकता है। लोगों को उनका व्याख्यान कुछ ठीक समझ नहीं आया और अपने-अपने काम-धंधे पर चले गये।

उपदेशक बाबा मीनार पर पूरे-के-पूरे दिन जमे रहे। उसके बाद दूसरे दिन भी। व्याख्यान उनका बराबर चलता रहा। पर इतनी देर वहां खड़े-खड़े उन्हें भूख लग आई थी, पर मूरख लोगों को मीनार पर जाकर उन्हें कुछ खाना देने की सूझ ही न होती थी। सोचते थे कि अगर हाथ के बजाय यह महोदय सिर से और भी बढ़कर काम कर सकते हैं तो उस सिर के जोर से अपने लिए खाने का इंतजाम तो आसानी से कर ही सकते होंगे।

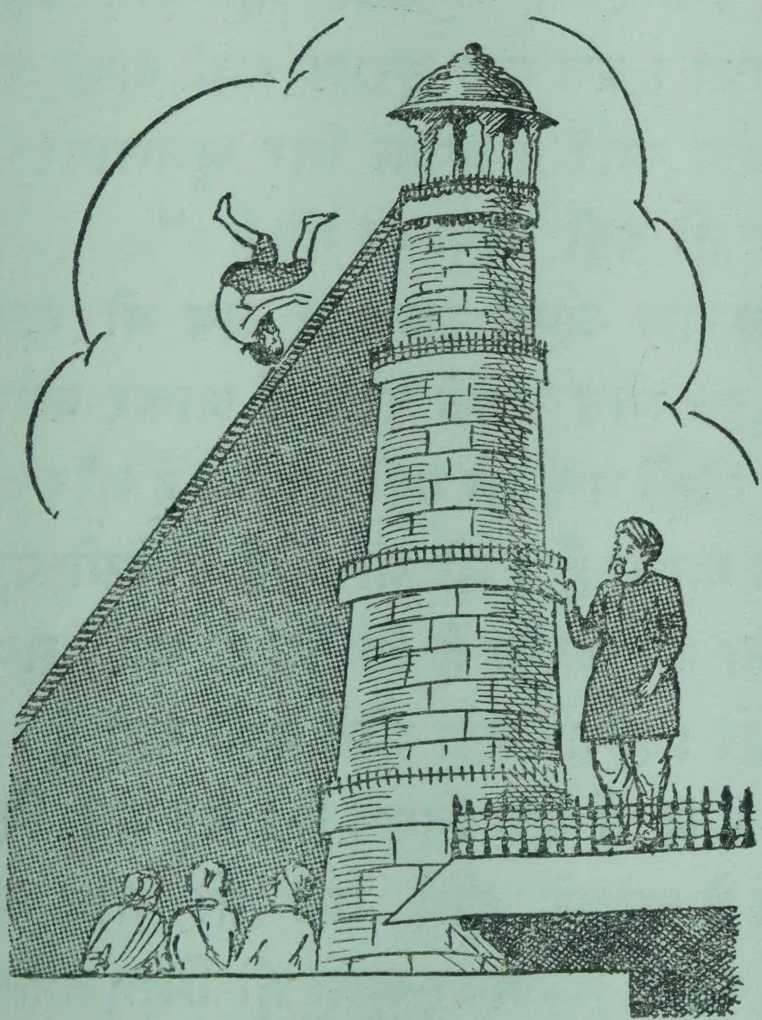
तीसरा दिन हुआ और बाबा उसी जगह थे।

प्यारे ने लोगों से पूछा, "क्यों भाई, उन महाशय

ने सिर से काम करना शुरू अभी किया है कि नहीं?"

लोग बोले, "अभी तो नहीं किया दीखता। अभी तो वह मुंह से ही बोल रहे हैं।"

ऐसे मीनार की चोटी पर खड़े बोलते-बोलते उन्हें एक दिन और बीता। पर कमजोरी बहुत होती जाती थी। आखिर वह लड़खड़ाये और उनका सिर लालटेन के खंभे में जाकर लगा। नीचे खड़े एक आदमी ने यह देखा तो दौड़ा गया खेत पर जाकर राजा को खबर दी।



ऊपर से लुढ़कता वह नीचे आया

हल-बैल छोड़ मूरखराज मीनार के पास आया। इस वक्त तक वह बूढ़ा बाबा भूख से बेहाल हो गया था और लड़खड़ाकर गिरा जा रहा था। प्यारे का वहां पहुंचना था कि शैतान ढेर होकर ढह पड़ा और धम-धम सीढ़ियों पर से गिरता-लुढ़कता आने लगा।

लुढ़कती-लुढ़कती वह काया आई और नीचे की पैड़ी पर धरती में धड़ाम से उसका सिर लगा। प्यारे पास पहुंचकर देखता ही था कि इन महोदय के सिर ने कितना कुछ करतब किया है, लेकिन तभी धरती फटी और उस काया का जीव वहीं जाने कहां पाताल में समा गया। बस एक सूराख वहां बाकी रह गया।

यह देख प्यारे ने अपना सिर खुजलाया। बोला, "छि:, यह तो वही नरक का गंद है।"

मूरखराज अपने राज्य में अब भी राज करता है और बहुत लोग उसके राज में जाकर बसने पहुंचते हैं। उसके दोनों भाई भी वहीं आ गये हैं और वह उनका भी पालन करता है। जो भी कोई परदेसी पहुंचे सबसे प्यारे राजा का कहना है कि आओ भाई, सब आओ। आओ, रहो। हमारे यहां कोई कमी नहीं है।

बस राज में एक नियम है। वह यह कि जिसके हाथ काम से खुरदरे होंगे उसे तो मान की रोटी मिलेगी। बाकी को बचा-खुचा ही मिल सकेगा।

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतमबुद्ध
१०. गांव सुखी, हम सुखी
११. निषाद और शबरी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार ?
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तन्दुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनद्दीन चिस्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मन्दिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिलजुल कर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सबेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे

मूल्य प्रत्येक का छः आना

छः आना